..... समझते हैं आएँगे ज़रूर कलियुग अन्त, सतयुग आदि में, पतितों को पावन बनाने। शास्त्रों में कितनी (मूँझ) कर दी है। वो शास्त्रों को सामने रखते हैं। तुम सिद्ध कर बतलाते हो। शास्त्र हैं ज़रूर। ऐसे नहीं कि हम शास्त्रों को मानते नहीं हैं। शास्त्र हैं ज़रूर; परन्तु उनमें झूठ है। इसलिए बाबा ब्रह्मा द्वारा सारा राज़ बैठ समझाते हैं। इन सब शास्त्रों में सार क्यों नहीं है, सिद्ध कर बतलाते हैं। ज़रूर झूठे हैं तब तो सार नहीं है। मुख्य है गीता। गीता से ही मेरे जैसे बन सकते। बाकी सब शास्त्र हैं गीता के बाल–बच्चे। उनसे कोई वर्सा नहीं मिल सकता। सर्व शास्त्रमई शिरोमणि गीता। श्रीमत मशहूर है। श्री है सबसे ऊँच से ऊँच। श्री–श्री 108 रुद्रमाला यह है शिवबाबा की माला। तुम जानते हो सभी आत्माओं का बाप वह है। 500 करोड़ आत्माएँ हैं। बाबा–2 तो सब कहते हैं ना। बाबा की रचना कैसे रची हुई है, यह कोई भी जान नहीं सकता। बाप कहते हैं, तुमको जास्ती कोई तकलीफ नहीं देते हैं, सिर्फ बाप, जिसको भूलने से गिरे हो, उनको जानना है। बाप को जानने से अब फिर घोर अंधयारे से घोर सोझरे में आ गए हैं। तुमको ज्ञान की डांस करनी है। मीरा आदि की थी भक्ति की डांस। अर्थ कुछ भी नहीं। व्यास भगवान कहते हैं। व्यास तो बाबा बैठा है, जो गीता सुनाते हैं। उनको शास्त्रों का बड़ा घमण्ड रहता है। यहाँ शास्त्रों की कोई बात नहीं। बाप कहते हैं मेरी कितनी ग्लानि कर दी है। कुत्ते–बिल्ले सबमें डाल दिया है। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। सबके लिए ऐसे कह देते। फिर शंकर–पार्वती की भी ग्लानि कर दी है। आसुरी मत पर चलने कारण कितनी ग्लानि कर दी है। तुम कोई को भी सिद्ध कर बता सकते हो। बाप एक है, उनसे वर्सा मिलना है, नहीं तो भारत को स्वर्ग का वर्सा कौन देंगे! कोई की ताकत नहीं। स्वर्ग कितना मीठा नाम है। स्वर्ग की स्थापना बाप बिगर कोई कर ना सके। सर्व को लिबरेट करना बाप का ही काम है। पोप भी कहते थे वन नेस हो; परन्तु वह होगी कैसे? हम .... के तो सब बच्चे हैं ना, फिर भाई–(बहन) कैसे हैं? यह जानना चाहिए ना। वन ..... फादर हो गया ना। यह तो सब ब्रदर्स हैं। सारी दुनिया कहती है– ओ गॉड फादर, रहम करो। तो ज़रूर बेरहमी कर रहे हैं। यह नहीं जानते बेरहमी करने वाला कौन है? रहम करने वाला तो एक बाप है। बे(रहम) है रावण, जिसको जलाते आते हैं; परन्तु जलता ही नहीं है। दुश्मन ही मर जाए तो फिर थोड़े ही जलाएँगे। कोई को भी पता नहीं है, यह क्या–2 बनाते रहते हैं। आगे तो हम भी घोर अंधयारे में थे। अब तो नहीं हैं ना। तो मनुष्यों को कैसे समझावें? यह रावण ही बड़े से बड़ा दुश्मन है। इनको घड़ी–2 जलाते हैं, फिर जाग जाते हैं। परम्परा से तो यह हो नहीं सकता। आदि से अंत तक तो रावण राज्य है नहीं। शास्त्रों में क्या–2 लिख दिया है। देवताओं की भी निन्दा कर दी है। भारत को सुखधाम बनाने वाला तो एक ही बाप है। बाप का ही परिचय देना है। यह भी समझते हैं कि सब नहीं समझेंगे। समझेंगे फिर भी वो ही जिनको शूद्र से ब्राह्मण बनना है। बाबा कहते हैं, जो मेरा भक्त हो, कोशिश कर उनको दो। धन व्यर्थ भी नहीं गँवाओ। देवताओं के भक्त ज़रूर देवता कुल के ही होंगे। ऊँच से ऊँच है एक बाप। सब उनको याद करते हैं। ऐसे नहीं, कुत्ते–बिल्ले सबमें वह है। यह तो शिवबाबा है ना। बाप से तो वर्सा लेना है। जो कोई अच्छा काम करके जाते हैं तो उनको पूजा जाता है। कलियुग में कोई से भी अच्छा काम होगा ही नहीं; क्योंकि यहाँ है ही आसुरी रावण मत। फॉरेनर्स को भल भगाया फिर भी अब सुख कहाँ है! कितने पार्टीशन हो गए हैं! तुम जानते हो, र(क्त) की नदियाँ बहनी हैं। मारने में देरी थोड़े ही करते हैं। लड़ाई है ही यवनों और कौरवों की। कितना अच्छी रीति बाप समझाते हैं; परन्तु किसकी बुद्धि में बैठेगा तब जब पहले बाप का परिचय देंगे। यह बाप भी है, टीचर भी है, सत्गुरु भी है। उनका कोई बाप–टीचर नहीं। पहले–2 है मात–पिता, फिर टीचर, फिर सद्गति के लिए सतगुरु। यह वण्डर है। बेहद का बाप एक ही बाप, टीचर और सतगुरु है। तुम जानते हो वो ही बाप ही ऊँच ते ऊँच है। वही भारत को स्वर्ग का वर्सा देने वाला है। नर्क के बाद है स्वर्ग।

नर्क के विनाश लिए विनाश ज्वाला भी खड़ी है। होलिका में स.... बनाते हैं ना, फिर .... जो इनके पेट से क्या निकलेगा। बरोबर देखते हैं, यूरोपवासी यादवों की बुद्धि से कितनी यह साइंस की इनवेन्शन निकली है। शास्त्रों में तो क्या–2 लिख दिया है। झूठ की झूठ। झूठ की वैल्यू नहीं। झूठ मिरई झूठ, सच की रत्ती भी नहीं। वहाँ झूठ का नाम नहीं होता। तो कोशिश कर पहले एक ही बात पर ही समझाना है। सर्व का सद्गति दाता एक ही बाप है। बाप आते ही भारत में हैं। तो यह सबसे बड़ा तीर्थ हो गया। कहते भी हैं प्राचीन भारत था; परन्तु समझते नहीं। अभी तुम समझते हो, जो प्राचीन हुआ है सो फिर होगा। तुमने जो राजयोग सीखा था वो ही फिर सीखते हो। बुद्धि में है यह नॉलेज बाबा कल्प–2 देते हैं। शिव के भी अनेक नाम रख दिए हैं। बबुलनाथ का भी मंदिर है। काँटों को फूल बनाया है; इसलिए बबुलनाथ कहते हैं। ऐसे बहुत नाम हैं जिनका अर्थ तुम ही समझा सकते हो। तुम पहले–2 बाप का परिचय दो, जिसको सब भूले हैं। कोई गीता के श्लोक कंठ कर लेते हैं फिर बैठ सुनाते हैं तो नाम हो जाता है। वास्तव में भाषा है हिन्दी। सतयुग की भाषा कोई संस्कृत नहीं है। पहले बाप को जानना है तब ही बुद्धियोग लगे। बाप से वर्सा लेना है। मुक्तिधाम से फिर जीवनमुक्तिधाम जाना है। यह है पतित जीवनबंध धाम। बच्चे जानते हैं हम नंगे आए थे, नंगे ही जाना है। बाप कहते हैं, अशरीरी बनो, अशरीरी बन बाप को याद करो। इससे ही बेड़ा पार है। सभी आत्माओं का बाप वो एक है। उससे ही वर्सा मिलना है। बाप का फरमान है मुझे याद करो तो योग से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। अंत मते सो गते हो जावेगी। हमको तो वापिस ज़रूर जाना है। जितना हो सके जल्दी जावें; परन्तु जल्दी तो हो ना सके। ऊँच पद पाना है तो बाबा को याद करना है। हम एक बाप के बच्चे हैं। तुमको कहते हैं तुम शास्त्रों को नहीं मानते हो। बोलो, वाह! शास्त्र तो बरोबर .... हैं; परन्तु इनमें कोई सार नहीं है। यह सब शास्त्र पढ़े–2 फिर भी भारत दुर्गति (को) पाया हुआ है। तो इससे फायदा क्या हुआ? अब बाप कहते हैं मनमनाभव। कृष्ण थोड़े ही कहते। कृष्ण कहाँ है? यह तो बाप है। प०पि०प० प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं तो ज़रूर यहाँ होने चाहिए। यह है पतित दुनिया। वो है पावन दुनिया। पतित दुनिया में कोई पावन हो ना सके। झाड़ में देखो ऊपर में खड़ा है और यह नीचे तपस्या में बैठे हैं। इनके ही फीचर्स सूक्ष्मवतन में देखते हैं। यह जाए फरिश्ते बनते हैं। श्री कृष्ण इस समय सांवरा है ना। गौरा तो नहीं है। गौरा और सांवरा का अर्थ कितना इज़ी है। बाप ने ज्ञान चिक्षा पर बिठाया तो गौरे बन गए। श्याम–सुंदर का अर्थ भी तो समझाना चाहिए ना। यह है सारी समझ की बातें। डिफीकल्टी तो नहीं है। पहली बात जब तक ना समझाई है तब तक कुछ समझेंगे नहीं। इसमें ही मेहनत लगती है। माया फट से याद भुला देती है। निश्चय भी लिखते हैं बरोबर हम ना० पद पावेंगे, फिर भी भूल जाते। बाबा ने फोटो निकालने की बात कही है, फिर 6–8 मास बाद बाबा दिखावेंगे कितने मर गए। माया बड़ी दुस्तर है। माया के तूफान भल कितने आए; परन्तु हिलना ना है। वो है पिछाड़ी की स्टेज। तूफान तो बहुत आवेंगे। माया रुस्तम होकर लड़ेगी। रिढ़–बकरी होंगे तो उनको फट से गिरा देगी। डरना ना है। वैद्य लोग कहते हैं पहले सारी बीमारी बाहर निकलेगी। बाबा भी कहते हैं तूफान बहुत आवेंगे। जब तुम पक्के हो जावेंगे तो माया बेशर्म हो जावेगी। समझेगी अब यह हिलने वाला नहीं है। बाप ही आय पत्थर बुद्धि से पारस बुद्धि बनाते हैं। रावण पत्थर बुद्धि बनाते हैं। रावण को जलाते आते हैं; परन्तु जलता ही नहीं। दिन–प्रतिदिन और ही लम्बा होता जाता है। बड़ी रमणीक नॉलेज है। भारत का प्राचीन ज्ञान और योग है। यह भी तुम जानते हो। अच्छा, मात–पिता, बापदादा का मीठे–2, सिकीलधे ज्ञान सितारों ... प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ।